"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

आज हाइड्रोजन बम में हरियाणा की जिस सीट पर वोट चोरी का राहुल गांधी जिक्र कर रहे है , वह मुलाना सीट कांग्रेस ने जीत रखी है।

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ा : 17 अंक : 37 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 06 नवम्बर से 12 नवम्बर, 2025 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

विद्रोही शुक्राचार्य का विमोचन एवं उत्कृष्ट परिचर्चा

मुंबई। अखिल भारतीय अग्निशिखा मंच के तत्त्वावधान में 1 नवंबर 2025 को मुलुंड के आरपी मार्ग स्थित मुक्तेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण में संजय दुबे के संयोजन में पवन तिवारी के बहु प्रतीक्षित उपन्यास 'विद्रोही शुक्राचार्य' का न केवल सार्थक विमोचन हुआ बल्कि पुस्तक पर विस्तृत चर्चा भी हुई।

इस लोकार्पण और आयोजन की विशेषता यह रही कि इस उपन्यास के चरित्र एवं किसी न किसी रूप में पुस्तक में उल्लेखित व्यक्तित्त्व ही इस समारोह में मंचासीन थे। समारोह अध्यक्ष श्री हरि वाणी, मुख्य अतिथि अलका पांडेय, विशेष अतिथि नन्दलाल क्षितिज,मुख्य वक्ता राम कुमार त्रिपाठी,वक्तागण रमाकांत ओझा, प्रज्वल वागदरी, पल्लवी रानी यह सभी गणमान्य इस उपन्यास के पात्रों में कहीं न कहीं उपस्थित हैं। विशिष्ट अतिथि और वक्ता द्वय गोपाल सिंह एवं दीपक कुमार त्रिपाठी जो जय हिंद अभियान के माध्यम से स्वतंत्रता के सम्मान हेतु समर्पित हैं. यह पुस्तक उन्हें ही समर्पित है। ऐसे में इस पुस्तक में सम्मिलित महानुभाव ही इसमें अतिथि थे। केवल विशेष अतिथि डॉ बाबू लाल सिंह एवं वक्ता राकेश मणि त्रिपाठी ही पुस्तक के बाहर के व्यक्तित्व थे। सभी वक्ताओं एवं अतिथियों ने पुस्तक पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालते हुए विद्रोही शुक्राचार्य को कालजयी कृति होने का विश्वास व्यक्त किया। इस पुस्तक को पढ़कर कई पुस्तकें रची जा सकती हैं। शुक्राचार्य के पूरे जीवन को इस कृति में जिस तरह से प्रस्तुत किया गया है वह एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सर्व प्रथम पल्लवी रानी के सरस्वती वंदना एवं अतिथियों द्वारा माँ शारदा की प्रतिमा पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्ज्वलन के उपरांत पुस्तक का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम का संचालन कुमार जैन ने किया। लेखकीय वक्तव्य में पवन तिवारी पुस्तक लेखन और शोध में लगे नौ वर्षों के अथक परिश्रम और उसमें भीषण व्यवधानों के उल्लेख करते हुए भावुक हो गये। क्योंकि इस पुस्तक लेखन ने उनके जीवन को 360 अंश घुमा दिया। पुस्तक को लेकर लोगों में एक प्रबल जिज्ञासा थी। लोकार्पण के बाद लोगों ने 28 हजार रूपये की पुस्तकें खरीदी।

श्रोताओं में सारे प्रबुद्ध एवं साहित्यकार थे। जिनमें सिंधवासिनी तिवारी, सत्यभामा सिंह, ओम प्रकाश तिवारी, नीरजा ठाकुर, कविता मानकर, शिल्पा सोनटक्के, प्रभात शर्मा, सूर्यकांत शुक्ला, रवि केडिया, श्रीधर मिश्र, ओम प्रकाश पांडे, रवि यादव, हेरम्ब तिवारी, संदीप कुमार, बृजेश सिंह,वरिष्ठ पत्रकार नामदार राही, पत्रकार कमलेश गुप्ता, पत्रकार प्रमेन्द्र सिंह,शिवकुमार सिंह, आनंद पाठक, विनय शर्मा दीप, नंदलाल थापर राकेश त्रिपाठी,पंडित सुरेंद्र नाथ तिवारी, नागेंद्र बहादुर सिंह, त्रिलोचन सिंह अरोड़ा, सुरेंद्र प्रसाद गाईं, अलका पांडेय अवधेश यदुवंशी, विनय सिंह विनम्र, विनोदानंद, डोमिनिक, पृथ्वीराज, मुन्ना यादव मयंक,रोमा झा, सुशील शुक्ला, पीयूष सिंह, रोमा झा,अर्पिता त्रिवेदी मीनाक्षी शर्मा कल्पेश यादव डॉ बाबूलाल सिंह रमाकांत ओझा विनोद आनंद आदि गणमान्य उपस्थित थे।

डॉ जंगबहादुर यादव का जन्मदिवस समारोह पूर्वक संपन्न

मुंबई। भांडुप तुलशेत पाड़ा के सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं चिकित्सक डॉ जंगबहादुर यादव का 50 वॉ जन्मदिवस समारोह उनके तुलशेत पाड़ा स्थित क्लिनिक पर मनाया गया। इस अवसर

पर समाजसेवी डॉ. सचिन सिंह (अध्यक्ष युवा ब्रिगेड असोसिएशन), डॉ योगेश नावडकर, डॉ संजय शुक्ला, डॉ. सुनील मिश्रा, डॉ अशोक नरोड़ा, डॉ अनिल चाडक, डॉ प्रकाश गिरी, डॉ. रमेश गुप्ता, डॉ गणेश जायसवाल ने केक काटकर, शाल, पुष्पगुच्छ, भेंट वस्तु प्रदान कर डॉ. जंगबहादुर यादव को जन्मदिन की शुभकामनायें प्रदान किया।

श्री अखिल भारत अचलगच्छ (विधीपक्ष) श्वैताम्बर जैन संघ के चुनाव 30 नवम्बर 2025 को

मुंबई। श्री अखिल भारत अचलगच्छ (विधीपक्ष) श्वैताम्बर जैन संघ मुंबई के संवत 2082 से 2084 तक आगामी तीन साल के लिए ट्रस्ट मंडल और व्यवस्थापक समिती के चुनाव प्रक्रिया शुरु हो गई है। ट्रस्टी और व्यवस्थापक समिती के लिए आवेदन करने हेतु 15 अक्टूबर 2025 बुधवार से 30 अक्टूबर 2025 गुरुवार तक संघ के कार्यालय मे दोपहर 12 बजे शाम 5 बजे तक फार्म भरकर जमा करवा सकेगे। फार्म ऑफिस से 30 (तीस) रुपए शुल्क देकर लेना है और जमा करवाते वक्त 500 (पांच) रुपए डिपॉझिट के रुप मे जमा करवाना है साथ मे आधार कार्ड की झेरोक्ष देनी है। नामांकन 14 नवम्बर 2025 शुक्रवार शाम 5 बजे तक वापस ले सकगे। आवश्यक ट्रस्टी और व्यवस्थापक सदस्य से अधिक फार्म आएगे तो चुनाव 30 नवम्बर 2025 को होगे। 9 अक्टूबर 2025 तक संघ के सदस्य बने होगे उनको ही फार्म भरने का अधिकार रहेगा और वो सदस्य ही मतदान कर सकेगे। संघ के चुनाव प्रक्रीया निर्विघ्न सम्पन्न हो इसके लिए चुनाव अधिकारी नियुक्त किये गये जिनके नाम इस प्रकार है। भूपेन्द्र केशवजी गोसर (वींढ), डॉ सी.ए. हिराचंद दामजी दंड (मंझल रेलडिया), मंगलचंद माणकचंद सेठ (भीनमाल), जयंतकुमार चमनलाल संघवी (मुन्द्रा) यह जानकारी संघ प्रमुख भावेश वोरा ने दी।

सऊदी अरब में रह रहे प्रयागराज के एक युवक का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है

मुंबई। जिसमें युवक मदद की गुहार लगा रहा है। उसका कहना है कि कफील ने उसका वीज़ा रख लिया है और उसको आने नहीं दे रहा। उससे कड़ी धूप मे रेगिस्तान मे ऊंट चरवाया जा रहा है! अंकित भारतीय उर्फ इंद्रजीत कमाने के लिए सऊदी अरब की राजधानी रियाद गया था।इंद्रजीत अब सोशल मीडिया के माध्यम से देश लौटने की अपील कर रहा है। उसने प्रधानमंत्री मोदी से भी वतन वापसी में मदद की गुहार लगाई है!!

यूपी में Reel बनाने वाले पुलिसकर्मियों की तैनाती पर रोक, सीएम योगी ने दिया आदेश

लखनऊ। यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ ने यह साफ कर दिया है कि प्रदेश में अनुशासन और सेवा भावना से कोई समझौता नहीं होगा.उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों को सख्त निर्देश जारी किए कि संवेदनशील ड्यूटी पॉइंट्स पर रील या वीडियो बनाने बनाने वाले पुलिसकर्मियों की तैनाती तुरंत रोकी जाए।

आकर्षण मुक्त भवः

हम सभी ब्राह्मण बच्चे काम विकार पर विजय पाने का सदैव प्रयास करते हैं किंतु कई बार हमारी आंखें धोखा दे देती हैं। हम किसी व्यक्ति की देह के प्रति आकर्षित हो जाते हैं जो हमारी काम वासना के सूक्ष्म रूप को दर्शाता है क्योंकि भले ही आकर्षण की बात हो या किसी देहधारी से प्रेम की, सबका अंत काम वासना पर ही होता है। दो देहधारियों के एक–दूसरे के प्रति लगाव को यह संसार आज जिस प्रेम का नाम देता है, वह वास्तव में काम वासना का ही बीज है।

कामवासना आत्मा की पवित्रता को झींझोर कर रख देती है। इसलिए कहा जाता है कि काम महासत्रु है। काम वासना का ख्याल आना, गंदे दृश्य देखना, कुछ समय के लिए भी अपने मन में गंदे विचार लाना या काम वासना में लिप्त होना एक पुरुषार्थी आत्मा को यह अवश्य ही स्मृति दिला देता है कि काम महाशत्रु और महापाप है। इसलिए, जब कभी भी हम किसी व्यक्ति कि देह पा देहधारी के प्रति आकर्षित हो या हमारे मन में कोई बुरे विचार आएं तो अपने आपको स्मृति दिलाएं कि यह सब कामवासना के कारण है जबकि मैं आत्मा कामवासना के वशीभूत नहीं हूं। मैं एक पवित्र आत्मा हूं। –शांति

दिव्य ज्ञान

यात्रा, एक पर्यटन–दृष्टि कोण से किसी एक स्थान से अन्य स्थानों पर गमन को निर्देशित करतीं हैं। यह कर्म की यात्रा हो सकती है, मौज–मस्ती भरी पिकनिक हो सकती है; या जन्म से मृत्यु तक की एक लंबी जीवन यात्रा भी। जीवन ऐसे ही खिलता–फूलता है। क्या यह वास्तविक यात्रा है? नहीं, यह हो नहीं सकती; यह भौतिक जगत में सुख और जीवनयापन के लिए एक यात्रा है। यह वास्तविक नहीं है, खासकर चिंतनशील मनुष्यों के लिए। उसके लिए वास्तविक यात्रा ब्रह्मा से ब्रह्म तक है। इसे समझना कठिन है; फिर भी प्रयास किया जा सकता है।

नमः शिवाय

आपका मंगल होस

दिव्य ज्ञान

रेगिस्तान की मरीचिका में, ईश्वर की खोज में, लगे मनुष्य को, तथाकथित बाबाओं, भगवानों कहलाने वाले चर्तु ढोंगीयों का एक समूह उनके फायदा निमित अज्ञानी मनुष्यों को मायावी अंधेरे में धकेल रहें हैं

लेकिन..... विशाल कलियुग की यह मायावी तांडव को रचयिता ईश्वर उन्हीं के हृदय में बैठ कर अपनी लीला का प्रखरता को चुपचाप देख रहे हैं

यह चित्रावली से बाहर निकल कर, अकेले खड़े होकर, इसे देखने का विवेकशील मुक्त व्यक्ती बनें।

नमः शिवाय

आपका मंगल होस

उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जिले में बिल्कुल अजमेर सेक्स कांड की तरह एक कांड सामने आया है

एक हिन्दू यादव समुदाय की नाबालिक लड़की को जुनैद ने दोस्ती किया फिर उसका बलात्कार किया और उसका वीडियो बना लिया। फिर जुनैद मुंबई जाने के पहले वह वीडियो अपने एक दोस्त हलीम को दिया फिर हलीम ने भी वीडियो के द्वारा ब्लैकमेल करके उस यादव समुदाय की हिंदू लड़की का बलात्कार किया फिर हलीम जब दिल्ली जाने लगा तब उसने वह वीडियो अपने दूसरे दोस्त मुमताज उर्फ कमर को दिया फिर कमर ने भी उसे वीडियो के आधार पर उस यादव सामुदाय की हिंदू लड़की का बलात्कार किया और इस तरह एक के बाद एक कुल 9 मुस्लिम दोस्तों ने जिसमें रयान शादाब हाफिक वेद सिराजुद्दीन ने उस यादव समुदाय की नाबालिक लड़की को ब्लैकमेल करके बलात्कार पर बलात्कार करते रहे। यह घटना अखबारों में प्रमुखता से छपी है। पहले अखिलेश यादव इस मुद्दे पर प्रेस कांफ्रेंस करने वाले थे लेकिन जैसे ही उन्हें पता चला कि सभी आरोपी मुस्लिम है तो अखिलेश यादव की द कॉन्फ्रेंस रद्द कर दी गई।

मुल्लाओं के वोटों के लिए तो ये डिम्पल यादव को भी।

मुल्ला मुलायम की औलाद

विप्र फाउण्डेशन
उन्नत समाज–समर्थ राष्ट्र

।। जय श्री परशुराम।।

विप्र फाउंडेशन परिवार के सभी अग्रणियों के लिए यह गर्व का विषय है कि संगठन अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु विगत सोलह वर्षों से दृढ़ता व समर्पण के साथ निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है। संस्था ने अनेक कीर्तिमान स्थापित करते हुए समाज को गौरवान्वित किया है।

हिमालयी उपलब्धियों के साथ संगठन को सतत सक्रिय, संतुलित और नये दिगंतों की ओर अग्रसर बनाए रखने में संस्था के स्वप्नदृष्टा श्री सुशील ओझा जी की दूरदर्शी दृष्टि, अथक परिश्रम, सामयिक प्रेरणा एवं आत्मीय नेतृत्व हम सब के लिये पाथेय का कार्य करता है।

संस्था के तीव्र विस्तार के साथ–साथ समाज की अपेक्षाएँ बढ़ना भी स्वाभाविक है। ऐसे में यह आवश्यक है कि प्रत्येक कार्यकर्ता में अनुशासन, सक्रियता, सेवा ओर समर्पण की भावना और अधिक सुदृढ़ हो।

इसी उद्देश्य से विप्र फाउंडेशन द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राधेश्याम शर्मा गुरूजी की अध्यक्षता में दो दिवसीय **आरोहण** नामक **नायक प्रशिक्षण शिविर** का आयोजन किया जा रहा है, जहाँ अनुशासन की दृढ़ता, दृष्टि की स्पष्टता, समर्पण की गहराई और अपनत्व की ऊष्मा का समन्वय होगा।

आपसे अपेक्षा है कि आप इस शिविर में अनिवार्य रूप से सहभागिता कर संगठन की दिशा, दृष्टि और प्रतिबद्धता को और अधिक सशक्त बनाएं तथा संगठन में आधिकारिक रूप से दीक्षित होने का गौरव भी प्राप्त करें।

आरोहण– नायक प्रशिक्षण शिविर, स्वर्गाश्रम, ऋषिकेश
10 जनवरी दोपहर 2 बजे से एवं **11 जनवरी सायं 5 बजे तक**

संयोजक
डॉ सुनील शर्मा CA, मुंबई

सह–संयोजक
पवन पारीक, नोखा
भगवान व्यास, हैदराबाद

* पूर्व पंजीयन अनिवार्य
** मात्र आमंत्रितों हेतु

VIPRA FOUNDATION

Keshar Kunj	Shree Parshuram Gyanpeeth	Vipra Gourav Bhawan	Teerth Yatri Niwas	Shree Parshuram Parisar
19/1A, Roy Street, Kolkata - 700 020 West Bengal	Centre for Excellence & Research Shipra Path, Mansarovar Jaipur-302020, Rajasthan	B-79, Royal Township Near RKLP Market, Saroli Surat-395010, Gujrat	Kande, Parshuram Kund Lohit - 792001 Arunachal Pradesh	Garhmagri, Sobhagpura Udaipur-313011 Rajasthan

viprafoundation@gmail.com www.viprafoundation.in

प्यारे लाल शर्मा का जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर जोरदार स्वागत

पाँच दिवसीय ऑस्ट्रेलिया के सांगठनिक दौरे से भारत लौटे इस्पेक के प्रभारी श्री प्यारे लाल शर्मा का जयपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाईअड्डे पर जोरदार स्वागत किया गया। विप्र फाउंडेशन राजस्थान जयपुर जोन अध्यक्ष श्री राजेश कर्नल एडवोकेट, जोन युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष श्री मुकेश काका, विप्र चेंबर जयपुर के अध्यक्ष श्री नवीन शर्मा, जयपुर देहात जिला अध्यक्ष श्री रमेश शर्मा मावावाले सहित अनेक साथी कार्यकर्ताओं ने प्यारेलाल जी शर्मा का सम्मान कर उत्साहवर्धन किया।

मेरा एक फिर खेल पूर्वानुमान/ भविष्यवाणी सटीक रहा....

ईश्वर के सानिध्य एवं आप सभी के आशीर्वाद से मेरी 90 खेल आकलन अभी तक सही होते रहे हैं। मैंने दो दिन पहले यह लिखा था कि भारत अपने स्पिन (फिरकी) गेंदबाजी के बदौलत दक्षिण अफ्रीका को "नचा" सकता है क्योंकि दक्षिण अफ्रीका एक मजबूत मगर अंधा घोड़ा (Blind Horse) संतुलित टीम है मगर इसकी थोड़ी कमजोरी अच्छी स्पिन अटैक को न खेल पाना है और दक्षिण अफ्रीका के लिए एक बहुत जटिल हो सकता है। संजोग से दक्षिण अफ्रीका ने महत्वपूर्ण (फाइनल) टॉस जीतने के बाद पहले गेंदबाजी कर अपना काल खुद ही बुला लिया क्योंकि आखिरी फाइनल इनिंग बल्लेबाजी उन्हीं को करनी थी। भारतीय स्पिनर भारतीय स्पिन के आगे (दो खिलाड़ियों) को छोड़कर वह नाचते नजर आई। मेरी भविष्यवाणी सही एवं खरी साबित हुई। भारतीय टीम को लगातार परिश्रम, तपस्या, समर्पण और सही समन्वय के लगभग चार दशक के बाद शानदार परिणाम "विश्वकप चैंपियन" बनने के लिए प्रशिक्षक एवं पूरी टीम को हार्दिक बधाई..... ससम्मान।

—संजय वर्मा
स्वतंत्र पत्रकार —खेलकूद एवं विज्ञान (गोरखपुर)

विश्वकप जीतने के बाद गायिका सुनिधि चौहान भी राष्ट्रीय गान के दौरान भावुक हुई.....

गायिका सुनिधि चौहान ने नवी मुंबई के डॉ. डी वाई पाटिल स्टेडियम में हुए ICC विमेंस क्रिकेट वर्ल्ड कप—2025 के फाइनल मैच से पहले दमदार परफॉर्मेंस दी। उन्होंने मंच पर भारत का राष्ट्रगान गाया और उसके बाद अपने लोकप्रिय गीतों से समा बांधा। राष्ट्रगान के उपरांत सुनिधि इमोशनल हो गईं और उनके आंख में आंसू आ गए. वैसे उक्त विश्व कप में भारतीय खिलाड़ियों एवं सभी ने खुशी के आंसू बहाए। यह भी एक रिकॉर्ड रहा।

—संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार —खेल एवं विज्ञान (गोरखपुर)

वर्ल्ड वूमेन' क्रिकेट चैंपियन (भारत) के प्रशिक्षक —अमोल मजूमदार....

फर्स्ट—क्लास क्रिकेट में मौका दिया। फिर भी, दो दशकों में 171 मैच, 11,167 प्रथम श्रेणी रन, 30 शतक के बावजूद उन्होंने भारत के लिए एक भी मैच नहीं खेला। दुर्भाग्य राय की अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं खेल सके। सचिन तेंदुलकर ने 2014 में अमोल के संन्यास के वक्त कहा था, 'मजूमदार सच्चे अर्थों में खेल के सेवक हैं।' पर अमोल के मन में एक खालीपन रह गया और वह बताते हैं, 'मैंने भारत के लिए कभी नहीं खेला, यही एक कमी रह गई।' 2014 में क्रिकेट को अलविदा कहने के बाद उन्होंने कोचिंग का रास्ता चुना। उन्होंने नीदरलैंड, दक्षिण अफ्रीका और राजस्थान रॉयल्स जैसी टीमों के साथ काम किया। उनकी पहचान एक ऐसे कोच की बनी जो कम बोलता है, लेकिन बहुत गहराई से हर चीज को समझता है। अक्तूबर 2023 में जब उन्हें भारतीय महिला क्रिकेट टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया गया, तो कई लोगों ने सवाल उठाए कि जिसने भारत के लिए कभी नहीं खेला, वो कोच कैसे बनेगा? लेकिन दो साल बाद, वही लोग उनके सामने सिर झुका रहे हैं। लंबा इतिहास. ..

—संजय वर्मा,
स्वतंत्र पत्रकार—खेलकूद एवं विज्ञान (गोरखपुर)

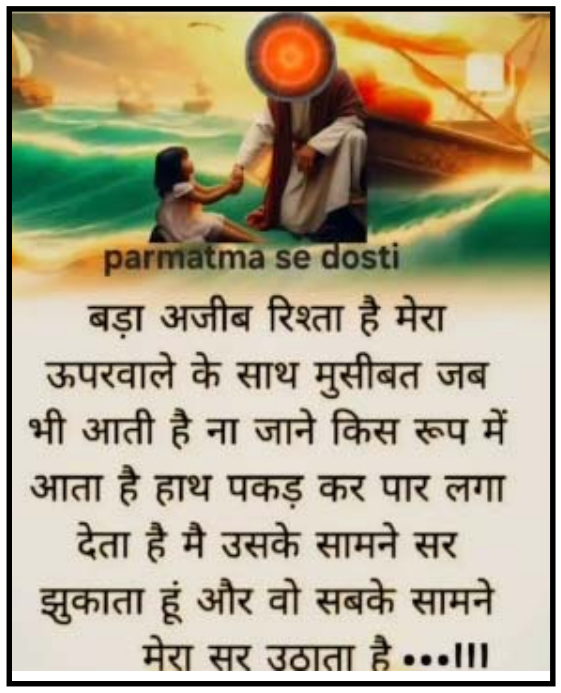

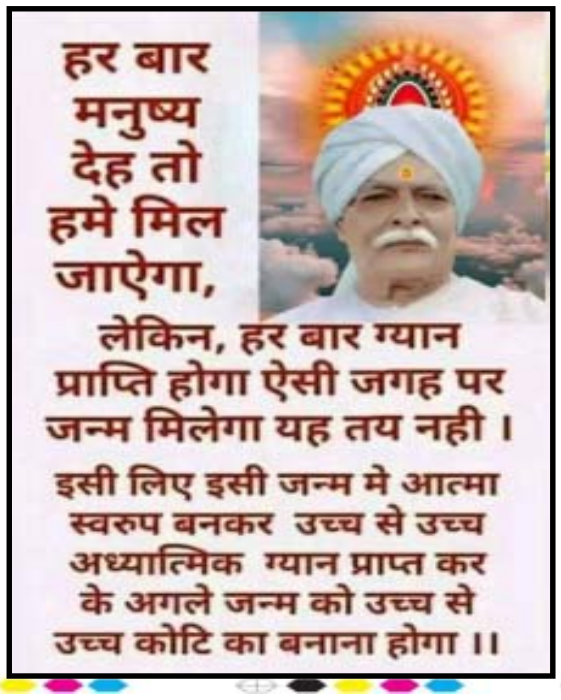

अब इनका क्या करना चाहिए?....

अब इनका क्या करना है? इन्होंने घोषणा की थी कि "अगर विश्वकप क्रिकेट महिला (फाइनल) में भारत, ऑस्ट्रेलिया से हारा तो इस भारत के हार की खुशी में पूरे पाकिस्तान में दीपावली मनाई जाएगी" उक्त बिना चरित्र के"दुल्हन" के अरमान पर पानी फिर गया?... ऐसे में इनका क्या करना चाहिए?... जहर बोलने में माहिर दुल्हन का नाम है _ "शाहिद अफरीदी".....

_संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार खेलकूद एवं विज्ञान (गोरखपुर)

सम्पादकीय...

लड़कियों ने किया कमाल, विश्व कप जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने पहली बार वनडे विश्व कप जीत कर केवल इतिहास ही नहीं रचा, बल्कि अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाने के साथ देश की लाखों लड़कियों के लिए खेलों और अन्य क्षेत्रों में संभावनाओं के द्वार खोलने का भी काम किया। इस जीत ने फिर यह सिद्ध किया कि लड़कियां लड़कों की ही तरह हर क्षेत्र में चुनौतियों से पार पा सकती हैं और अपने हौसले से देश–दुनिया को चमत्कृत कर सकती हैं। यह जीत लड़कियों के प्रति हमारे पुरुष प्रधान समाज के दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव लाने वाली सिद्ध होनी चाहिए। यह बदलाव उन्हें आगे बढ़ने और खुद को साबित करने के मौके तो देगा ही, भारतीय समाज में खेलों की महत्ता भी बढ़ाएगा। ऐसा होना भी चाहिए, क्योंकि आज के युग में खेल के मैदान में अर्जित की जाने वाली सफलताएं देश विशेष की प्रगति का सूचक हैं। महिला विश्व कप की जीत इसलिए एक बड़ी सफलता है, क्योंकि इसके पहले किसी अंतरराष्ट्रीय खेल में भारतीय लड़कियों की टीम ने कोई खिताब नहीं जीता था। यह जीत इसलिए भी विशेष है, क्योंकि महिला विश्व कप क्रिकेट में आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड का दबदबा था। इसके पहले के सभी महिला विश्व कप क्रिकेट आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के नाम रहे। एक तरह से भारतीय टीम ने अपनी जीत से विकासशील देशों की महिला क्रिकेट टीमों को भी प्रेरणा प्रदान करने का काम किया। महिला वनडे विश्व कप जीत की प्रतीक्षा किस बेसब्री से की जा रही थी, इसका पता फाइनल मुकाबले को लेकर बने माहौल से भी चलता है और स्टेडियम में उमड़ी दर्शकों की भीड़ से भी। यह माहौल और भीड़ इस कारण थी कि खेल प्रेमियों को कप्तान हरमनप्रीत कौर और उनकी उत्साही टोली पर भरोसा था।इस भरोसे का आधार उनके खेल में आए सुधार के साथ यह भी था कि भारतीय महिला टीम दो बार वनडे विश्व कप के फाइनल में पहुंच चुकी थी। यह स्वाभाविक है कि इस जीत को 1983 के वनडे विश्प कप में कपिल देव के नेतृत्व वाली टीम की ओर से हासिल की गई खिताबी जीत के समकक्ष बताया जा रहा है। उस जीत ने भारतीय क्रिकेट का चेहरा बदल दिया था। महिला क्रिकेट के साथ ऐसा होना और आसान है, क्योंकि तब के मुकाबले आज भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड आर्थिक रूप से कहीं अधिक सक्षम है। वास्तव में क्रिकेट बोर्ड की इस आर्थिक सक्षमता ने ही महिला क्रिकेटरों के विश्व विजयी अभियान को सुगम बनाया। बीसीसीआइ ने 2006 में महिला क्रिकेट की कमान अपने हाथ में ली थी। यदि उसने दो दशक के अंदर ही महिला क्रिकेटरों को शिखर पर पहुंचा दिया तो इसका कारण है उनके प्रोत्साहन के लिए उनकी पुरस्कार राशि पुरुषों के समान करना, उन्हें उनके जैसे संसाधन उपलब्ध कराना और महिला प्रीमियर लीग शुरू करना।

वैश्विक अनिवार्यता है हिमालय की रक्षा

मानवीय हस्तक्षेप और जलवायु परिवर्तन के गठजोड़ ने हिमालय की नाजुक पारिस्थितिकी पर हाल के दिनों में संकट गहरा दिया है। लगातार बढ़ रही परियोजनाओं और कांक्रीट आधारित निर्माण के पर्यावरणीय, सामाजिक और भू–वैज्ञानिक प्रभावों को नियंत्रित करते हुए अब हमें एक सतत स्थायित्व की राह तलाशना होगी।

विश्व की 'छत' और 'तीसरे ध्रुव' के रूप में विख्यात हिमालय, केवल एक प्राकृतिक भौगोलिक संरचना मात्र नहीं है, बल्कि एक जीवंत पारिस्थितिकी प्रणाली है जो करोड़ों लोगों , फ्लोरा , फोना की जीवन रेखा का आधार है । हिमालय अपनी विशालता के बावजूद अत्यंत नाजुक और अपेक्षा कृत नया वलित पर्वत है, जो अभी भी भू–वैज्ञानिक दृष्टि से सक्रिय है और प्रतिवर्ष लगभग 5 मिलीमीटर ऊँचा उठ रहा है । नेचर द्वारा इसके भूभाग का स्थाई सेटलमेंट होना शेष है। इस निरंतर चल रही नैसर्गिक प्रक्रिया में भूस्खलन होते रहते हैं। पिछले कुछ दशकों में 'विकास' के नाम पर इस क्षेत्र में जिस पैमाने पर निर्माण हुआ है, उसने न केवल इसकी नैसर्गिक सुंदरता को विकृत किया है, बल्कि इसके अस्तित्व के लिए ही गंभीर संकट खड़ा कर दिया है।

लगातार बढ़ती जलविद्युत परियोजनाओं ने भी हिमालय पर खतरा बढ़ा दिया है। हिमालयी क्षेत्र को भारत का 'पावर हाउस' माना जाता है, जहाँ 46,850 मेगावाट की स्थापित क्षमता के साथ 1,15,550 मेगावाट की संभावित जलविद्युत क्षमता है । नवंबर 2022 तक इस क्षेत्र के 10 राज्यों और दो केंद्रशासित प्रदेशों में 81 बड़ी जलविद्युत परियोजनाएँ (25 मेगावाट से अधिक उत्पादन क्षमता की) कार्यशील थीं और 26 अन्य निर्माणाधीन थीं, जबकि 320 और बड़ी परियोजनाएँ विभिन्न स्तरों पर क्रियान्वयन स्वीकृति हेतु विचाराधीन हैं । हिमाचल प्रदेश की केवल सतलुज नदी घाटी में ही यदि सभी प्रस्तावित परियोजनाओं का निर्माण हो जाता है तो 22% नदी बाँध के पीछे झील के रूप में खड़ी रहेगी और 72% सुरंगों के भीतर बहेगी ।

जलविद्युत परियोजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर वनों की कटाई की जाती है। किन्नौर जिले में ही, 2014 तक विकास परियोजनाओं के लिए 984 हेक्टेयर वन भूमि का हस्तांतरण किया जा चुका था, जिसमें से 90 % जलविद्युत परियोजनाओं और ट्रांसमिशन लाइनों के लिए था ।

क्षतिपूरक नवीन वनीकरण की नीति भी प्रभावी नहीं रही है, क्योंकि नए पौधारोपण के वृक्ष बनते तक अक्सर रोपण असफल हो जाते हैं और वनों के वास्तविक नुकसान की भरपाई नहीं कर पाते । इसके अलावा, परियोजनाओं के निर्माण से पहाड़ों में व्यापक भू–स्खलन की घटनाएँ बढ़ी हैं, जैसा कि रुद्रप्रयाग और टिहरी जिलों में देखा गया । केदारनाथ की घटना से लेकर धाराली में बादल फटने की मार का दर्द भूला नहीं जा सकता।

स्थानीय समुदायों को इन परियोजनाओं की भारी कीमत चुकानी पड़ रही है। उनकी आजीविका के मुख्य स्रोत वन और जल स्रोत नष्ट हो रहे हैं । जनसांख्यिकीय बदलाव आ रहे हैं, जहाँ युवाओं का पलायन बढ़ रहा है, जिससे आत्मनिर्भरता में कमी आई है और महिलाओं व बुजुर्गों पर घरेलू जिम्मेदारी का बोझ बढ़ा है ।

हिमालय भूकंपीय रूप से सक्रिय क्षेत्र का हिस्सा है और इसके नदी घाटी क्षेत्र प्राकृतिक रूप से भूस्खलन के प्रति संवेदनशील हैं । जलवायु परिवर्तन ने इस स्थिति को और भी गंभीर बना दिया है। ग्लेशियरों के पिघलने, पर्माफ्रॉस्ट के अस्थिर होने, तड़ित बिजली और बादल फटने जैसी घटनाओं में निरंतर वृद्धि ने इस क्षेत्र को आपदाओं के प्रति और अधिक संवेदनशील बना दिया है । हाल के वर्षों में जलविद्युत परियोजनाओं से जुड़ी आपदाओं की आवृत्ति चिंताजनक रूप से अधिक रही है।

2013 में केदारनाथ बाढ़ से फाटा–ब्युंग, सिंगोली–भटवारी और विष्णुप्रयाग परियोजनाओं को गंभीर क्षति हुई थी। 2021 के भूस्खलन और हिमस्खलन से ऋषि गंगा परियोजना का विनाश, विष्णुगढ़–तपोवन परियोजना क्षतिग्रस्त होना, 200 से अधिक लोगों की मौत भूली नहीं जा सकती। 2022 किन्नौर में भूस्खलन से 1,091 मेगावाट की करछम वांगटू जलविद्युत संयंत्र का निर्माण कार्य प्रभावित हुआ है और इसी वर्ष हुई धाराली की घटना के जख्म तो शायद कभी भर ही नहीं पाएंगे।

हाल की घटनाओं से स्पष्ट है कि हिमालय जैसे संवेदनशील क्षेत्र में जलविद्युत परियोजनाएँ और अंतहीन निर्माण कार्य न केवल पर्यावरण के लिए, बल्कि मानव जीवन के लिए भी गंभीर जोखिम उत्पन्न कर रहीं हैं।

हिमालय के संरक्षण और सतत सस्टेनेबल विकास के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता है। अब इनका वैज्ञानिक पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए ।

हिमालय में अधिकांश मौजूदा या निर्माणाधीन परियोजनाओं की परिकल्पना पिछले 10–15 वर्ष पहले की गई थी। वर्तमान वैज्ञानिक आँकड़ों के आधार पर इन परियोजनाओं का पुनर्मूल्यांकन करने की सख्त आवश्यकता है ।

विशेषज्ञ समितियाँ (जैसे रवि चोपड़ा समिति) गठित कर इन परियोजनाओं के प्रभाव का गहन अध्ययन किया भी गया है , इस अध्ययन का विस्तार किया जाना चाहिए । स्थानीय समुदायों की भागीदारी बढ़ाना होगा, परियोजना पर निर्णय लेने से पूर्व स्थानीय पंचायत की लिखित सहमति ली जानी चाहिए। सभी नीतियों और योजनाओं में स्थानीय जनता, विशेषकर महिलाओं की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए ।

पर्यावरणीय नियमों का कड़ाई से पालन करने वाला सामाजिक वातावरण बनाना चाहिए। बड़ी निर्माण परियोजनाओं को अनुमति दिए जाने के निर्णयों पर पुनर्विचार करना होगा । भागीरथी इको–सेंसिटिव ज़ोन (BESZ) जैसी सुरक्षात्मक व्यवस्थाओं के पालन को कड़ाई से सुनिश्चित करना होगा ।

हिमालय की रक्षा केवल किसी एक क्षेत्र या देश की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि यह एक वैश्विक अनिवार्यता है । जलविद्युत परियोजनाओं के माध्यम से स्वच्छ ऊर्जा प्राप्त करने का लक्ष्य निस्संदेह महत्वपूर्ण है, परंतु यह लक्ष्य हिमालय जैसी नाजुक पारिस्थितिकी प्रणाली की कीमत पर पूरा नहीं किया जाना चाहिए।

आवश्यकता इस बात की है कि हम विकास की अपनी अवधारणा पर पुनर्विचार करें और एक ऐसे मॉडल को अपनाएँ जो मानव की आवश्यकताओं और प्रकृति के संरक्षण के बीच सामंजस्य स्थापित कर सके। हिमालय केवल एक पर्वत श्रृंखला नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आशा और अस्तित्व का प्रतीक है, और इसकी रक्षा करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

(विवेक रंजन श्रीवास्तव)
–विभूति फीचर्स

शीर्षक : संघर्ष
विधा : कविता

जीवन एक संघर्ष है।
बिन संघर्ष सब शून्य।
जन्म लिया है जिसने।
तो मरना उसे पड़ेगा।।

ऊपर चढ़ना तुम सीखो।
गिरना सबको आता है।
गिरकर जो फिर चढ़ता है।
वो ही वीर कहलता है।।

मिले सब कुछ आराम से।
तो उसमें क्या तेरा योगदान।
मेहनत करके जो मिला।
सच्चा सुख उसमें मिलता।।

बाप कमाई आप कमाई में।
अंतर तुझे समझना होगा।
जीवन के इस चक्र को।
फिर तुझे भेदना होगा।।

चाँद की चम्मच लेकर।
जो जग में जन्मा है।
उसका जीवन सदा ही।
क्षमता हीन होता है।।

जय जिनेंद्र
संजय जैन "बीना" मुंबई

प्रश्नः- तकदीर में ऊंच पद नहीं है तो किस बात में बच्चे सुस्ती करते हैं?

उत्तरः- बाबा कहते बच्चे अपना सुधार करने के लिए चार्ट रखो। याद का चार्ट रखने में बहुत फायदा है। नोट बुक सदा हाथ में हो। चेक करो कितना समय बाप को याद किया? हमारा रजिस्टर कैसा है? दैवी कैरेक्टर है? कर्म करते बाबा की याद रहती है? याद से ही कट उतरेगी, ऊंच तकदीर बनेगी।

शिक्षा अगर न होती बदलाव किया जाता
क्या देश में पिछड़ों को सम्मान दिया जाता
है शुक्र हम जहालत से आ गये हैं बाहर
उस दौर में अंगूठा ये काट लिया जाता

अनीस कुरैशी..

"मीठे बच्चे - तुम्हें अभी बहुत-बहुत साधारण रहना है, फैशनेबुल ऊंचे कपड़े पहनने से भी देह-अभिमान आता है"

अभी तुम संगम पर हो। तुम जानते हो बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। लड़ाई भी जरूर होगी। एटॉमिक बाम्ब्स आदि खूब बनाते रहते हैं। कितना भी माथा मारो कि यह बन्द हो जाए परन्तु ऐसे हो नहीं सकता। ड्रामा में नूँध है। समझाने से भी समझेंगे नहीं। मौत होना ही है तो बन्द कैसे होगा।

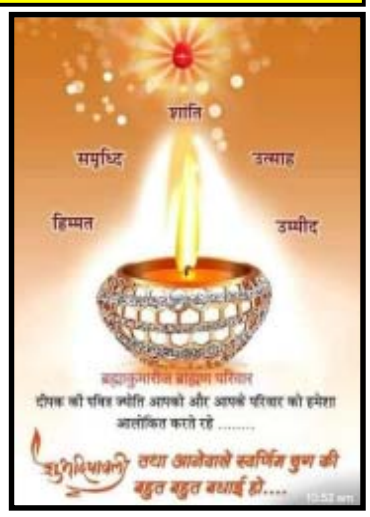

'कौन यहां पे हंसता
(मनहरण घनाक्षरी काव्य)

सारा जहां है भागता,
कौन यहां पे हंसता ।
छाई मन में उदासी ,
कैसा ये सफ़र है।

रास्तों पे लगा है मेला,
दिलों में लिए फासला ।
मंजिलों की ओर चलें,
कैसा ये सफ़र है।

बढ़ती हुई उम्मीदें ,
नापाक बनें इरादें।
खत्म सच्चाई के वादे,
कैसा ये सफ़र है।

सारा जहां है भागता,
कौन यहां पे हंसता ।
सब बनें है अंजान ,
कैसा ये सफ़र है – – –

प्रा.गायकवाड विलास
मिलिंद महाविद्यालय लातूर
महाराष्ट्र

आवाहन- (बिहार वालों)

फंस मत जाना आज सनातन
रिपु की मधुरी बानी पर।
अगर बंटे तो कट जाओगे,
अपनी ही नादानी पर ।

सीता मइया,बुद्ध हमारे,
जन्म लिए जिस माटी में ।
गंगा माई इठलाती हैं,
सनातनी परिपाटी में ।
नालंदा का ज्ञान हमारा,
चंद्रगुप्त की थाती में ।
चारा चोरों ने छूरा भोंका,
उस मां की छाती पर।

गाली दें वो प्रभू राम को,
गर्वित अफजल बानी पर।
अगर बंटे तो कट जाओगे,
अपनी ही नादानी पर।

जान लुटाते हैं जो रोहिंग्या,
या बंगलादेशी पर।
नब्बे वाला लूट, अपहरण,
हत्या वाली पेसी पर।

जिनके छत पर कट्टा,बम,
पत्थर ये उनके साथ खड़े।
अट्टाहास लगाते हैं,
हिंदू की ऐसी–तैसी पर।

याद करो तेजाब डालने,
वाली उस मनमानी पर।
अगर बंटे तो कट जाओगे,
अपनी ही नादानी पर।

सजायाफ्ता लोगों को,
आदर्श बताया जाता है ।
नौवीं फेल हुआ उसको,
उत्कर्ष बताया जाता है ।
भ्रष्टाचारी एक हुए हैं ,
अप्पू, पप्पू,टप्पू सब।
जंगलराज–अपहरण को,
संघर्ष बताया जाता है ।

अब कितना विश्वास करोगे,
इनकी कारस्तानी पर।
अगर बंटे तो कट जाओगे,
अपनी ही नादानी पर।

चूक न जाना वरना बाबर,
के वंशज बल खाएंगे ।
और शहाबुद्दीन न जाने,
कितने फिर आ जाएंगे ।
पाकिस्तानी डांस करेंगे,
बंग्लादेशी झूमेंगे ।
संभल जैसा हाल हुआ तो,
आप कहां पर जाएंगे ?

हिंदू हो तो टिककर रहना,
बाबू अपने पानी पर।
अगर बंटे तो कट जाओगे,
अपनी ही नादानी पर।

तुम विकास के साथी हो,
या जातिवाद पर जाओगे ?
बिजली,पानी,सड़क,सुरक्षा,
इन सबको बिसराओगे ?
इधर सुशासन उधर दुशासन,
किस पर मुहर लगाओगे ?
जैसा बीज रहेगा बाबू,
वैसा ही फल पाओगे ।

अब विकास का रथ मत रोको,
वंशवाद की घानी पर ।
अगर बंटे तो कट जाओगे,
अपनी ही नादानी पर।

छठ मैया की कसम तुम्हें,
अब जातिवाद पर चोट करो ।
गंगा मइया सौंह दे रहीं,
वंशवाद पर चोट करो ।
नब्बे वाला दशक न लौटे,
रंगदारी से बचना है –
सीता मंदिर जो बनवाए,
मिलकर उनको वोट करो।

बचकर रहना झूठे वादों
वाली कारस्तानी पर ।
अगर बंटे तो कट जाओगे,
अपनी ही नादानी पर।

सुरेश मिश्र

"वृद्ध दम्पत्ति चाहिए"

विदेश में एक समाचार पत्र में बड़ा अजीब सा विज्ञापन प्रकाषित हूआ था:-.!! शीर्षक था। "वृद्ध दम्पत्ति चाहिए"
"जो हमारे साथ में रह सके!"
एक वृद्ध दम्पत्ति ने फोन किया,,:- हमें जॉब चाहिए, पर काम क्या करना होगा..??
वहाँ से आवाज़ आई.. आपको कोई काम नहीं करना है क्योंकि, हम दोनों डॉक्टर्स हैं और हमारी "माँ" तीन महीने पहले चल बसी..!! काम करने के लिए हमारे पास सेवादार हैं..! पर हमें कोई पुछने वाला नहीं है कि, बेटा आज देर से क्यूँ आये..? खाना खाया या नहीं..???
हम काम से घर आएँ तो, कोई प्रेम देकर सहला दे..!!
उन वृद्ध दंपति की आँखों में आँसू आ गए..
आदरणीय,, मित्रों.. जगत की विडम्बना है कि जिनके घर में माता-पिता हैं उनकी कदर नहीं है..!! 😔🤦‍♂️
और जिनके नहीं हैं, उनको लगता है माता-पिता होते तो कितना अच्छा रहता..!.. याद रखें,, मुफ्त में सिर्फ मां बाप का प्यार मिलता है, उसके बाद हर रिश्ते के लिए कुछ ना कुछ चुकाना पड़ता है..!! इस समुची सृष्टि में "माता पिता" से बढकर कोई नही..!! काश.. यह बात सभी संताने समझ पाती..!!

Manudeep9340

राधा कृष्ण की प्रेम कहानी मन छू लेने वाला प्रसंग

गोकुल में एक मोर रहता था. वह रोज़ भगवान कृष्ण भगवान के दरवाजे पर बैठकर एक भजन गाता था– "मेरा कोई ना सहारा बिना तेरे, गोपाल सांवरिया मेरे, माँ बाप सांवरिया मेरे".

रोज आते–जाते भगवान के कानों में उसका भजन तो पड़ता था लेकिन कोई खास ध्यान न देते. मोर भगवान के विशेष स्नेह की आस में रोज भजन गाता रहा.

एक–एक दिन करते एक साल बीत गए. मोर बिना चूके भजन गाता रहा. प्रभु सुनते भी रहे लेकिन कभी कोई खास तवज्जो नहीं दिया.

बस वह मोर का गीत सुनते, उसकी ओर एक नजर देखते और एक प्यारी सी मुस्कान देकर निकल जाते. इससे ज्यादा साल भर तक कुछ न हुआ तो उसकी आस टूटने लगी.

साल भर की भक्ति पर भी प्रभु प्रसन्न न हुए तो मोर रोने लगा. वह भगवान को याद करता जोर–जोर से रो रहा था कि उसी समय वहां से एक मैना उडती जा रही थी.

उसने मोर को रोता हुआ देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ. आश्चर्य इस बात का नहीं था कि कोई मोर रो रहा है अचंभा इसका था कि श्रीकृष्ण के दरवाजे पर भी कोई रो रहा है!

मैना सोच रही थी कितना अभागा है यह पक्षी जो उस प्रभु के द्वार पर रो रहा है जहां सबके कष्ट अपने आप दूर हो जाते हैं.

मैना, मोर के पास आई और उससे पूछा कि तू क्यों रो रहा है?

मोर ने बताया कि पिछले एक साल से बांसुरी वाले छलिये को रिझा रहा है, उनकी प्रशंसा में गीत गा रहा है लेकिन उन्होंने आज तक मुझे पानी भी नही पिलाया.

यह सुन मैना बोली– मैं बरसाने से आई हूं. तुम भी मेरे साथ वहीं चलो. वे दोनों उड़ चले और उड़ते–उड़ते बरसाने पहुंच गए.

मैना बरसाने में राधाजी के दरवाजे पर पहुंची और उसने अपना गीत गाना शुरू किया– श्री राधे–राधे–राधे, बरसाने वाली राधे.

मैना ने मोर से भी राधाजी का गीत गाने को कहा. मोर ने कोशिश तो की लेकिन उसे बांके बिहारी का भजन गाने की ही आदत थी.

उसने बरसाने आकर भी अपना पुराना गीत गाना शुरू कर दिया– मेरा कोई ना सहारा बिना तेरे, गोपाल सांवरिया मेरे, माँ बाप सांवरिया मेरे"

राधाजी के कानों में यह गीत पड़ा. वह भागकर मोर के पास आईं और उसे प्रेम से गले लगा लगाकर दुलार किया.

राधाजी मोर के साथ ऐसा बर्ताव कर रही थीं जैसे उनका कोई पुराना खोया हुआ परिजन वापस आ गया है. उसकी खातिरदारी की और पूछा कि तुम कहां से आए हो?

मोर इससे गदगद हो गया. उसने कहना शुरू किया– जय हो राधा रानी आज तक सुना था की आप करुणा की मूर्ति हैं लेकिन आज यह साबित हो गया.

राधाजी ने मोर से पूछा कि वह उन्हें करुणामयी क्यों कह रहा है. मोर ने बताया कि कैसे वह सालभर श्याम नाम की धुन रमाता रहा लेकिन कन्हैया ने उसे कभी पानी भी न पिलाया.

राधाजी मुस्कराईं. वह मोर के मन का टीस समझ गई थीं और उसका कारण भी.

राधाजी ने मोर से कहा कि तुम गोकुल जाओ. लेकिन इसबार पुराने गीत की जगह यह गाओ– जय राधे राधे राधे, बरसाने वाली राधे.

मोर का मन तो नहीं था करुणामयी को छोडकर जाने का, फिर भी वह गोकुल आया राधाजी के कहे मुताबिक राधे–राधे गाने लगा.

भगवान श्रीकृष्ण के कानों में यह भजन पड़ा और वह भागते हुए मोर के पास आए, गले से लगा लिया और उसका हाल–चाल पूछने लगे.

श्रीकृष्ण ने पूछा कि मोर तुम कहां से आए हो. इतना सुनते ही मोर भड़क गया.

मोर बोला– वाह छलिये एक साल से मैं आपके नाम की धुन रमा रहा था, लेकिन आपने तो कभी पानी भी नहीं पूछा. आज जब मैंने पार्टी बदल ली तो आप भागते चले आए.

भगवान मुस्कुराने लगे. उन्होंने मोर से फिर पूछा कि

तुम कहां से आए हो

मोर सांवरिए से मिलने के लिए बहुत तरसा था. आज वह अपनी सारी शिकवा–शिकायतें दूर कर लेना चाहता था.

उसने प्रभु को याद दिलाया– मैं वही मोर हूं जो पिछले एक साल से आपके द्वार पर "मेरा कोई ना सहारा बिना तेरे, गोपाल सांवरिया मेरे, माँ बाप सांवरिया मेरे" गाया करता था.

सर्दी–गर्मी सब सहता एक साल तक आपके दरवाजे पर डटा रहा और आपकी स्तुति करता रहा लेकिन आपने मुझसे पानी तक न पूछा. मैं फिर बरसाने चला गया. राधाजी मिलीं. उन्होंने मुझे पूरा प्यार–दुलार दिया.

भगवान श्रीकृष्ण मुग्ध हो गए. उन्होंने मोर से कहा– मोर, तुमने राधा का नाम लिया यह तुम्हारे लिए वरदान साबित होगा. मैं वरदान देता हूं कि जब तक यह सृष्टि रहेगी, तुम्हारा पंख सदैव मेरे शीश पर विराजमान होगा.

!! जय श्री श्याम!!

राधे का सत्संग हो,और श्याम हों साथ।

मन मंदिर हो प्रेम का,जोड़ मित्रवर हाथ।

!! जय श्री श्याम !!

।।मोर मुकुट वाले की जय! ।। ।। राधे–कृष्ण की जय!।।

.....

शादी को व्यापार बनाया

विधा : कविता

गोरा सुंदर रूप है तेरा
पर दिल उतना ही काला है।
मन तेरा तो बहुत चंचल है
पर दिल उतना ही छोटा है।
खोट अगर हो दिलमें तेरे
तो प्यार नही कर सकते हो।
बस मौके का फायदा उठाकर
दिलकी भावनाओं से खेलते हो।।

आज के युग में देखो तो
प्यार–मोहब्बत खेल बन है।
शादी–ब्याह जैसे पवित्र बंधन भी
एक व्यवसाय जैसा बन गया है।
शर्तों के आधार पर देखो
विवाह आदि आज हो रहे है।
पैसे पहले लेकर दलाल आदि
शादी ब्याह करवा रहे है।।

कलयुग का ये खेल निराला
जिसमें लड़के ही फस रहे है।
मोटी रकम लेकर लड़कियाँ
देखो लड़को को ठग रही है।
प्यार का नाटक कुछ दिन करके
जान उन पर लूटाती है।
फिर दिल पर घाव देकर
जीवन बर्बाद कर रही है।।

कुछ दिन साथ व्यता कर वो
आरोप लगाना शुरु करती है।
कभी सास तो कभी नंद और
कभी पति पर आरोप लगती है।
अपने अनुरूप महौल बनाकर
खेल शुरू ये करती है।
ताकि सहानभूति मिलने लगे
मोहल्ला और पड़ोसियों की।।

कभी मम्मी–पापा को फोन करती
तो कभी भैया–भाभी को बतलाती है।
अपने ऊपर हो रहे अत्याचारों का
बिना बजह के खूब बखान करती है।
ताकि मकसत पूरा हो जाये
जिसके लिए ये ब्याह किया है।
फिर धमकी देकर और फसाकर
समझौता पैसों में कर अलग होती है।।

जय जिनेंद्र
संजय जैन "बीना" मुंबई

'रूलाती है जिंदगी

(मनहरण घनाक्षरी काव्य)

कौन देता है सहारा,
देखता समाज सारा।
ख़फ़ा हुआ तक़दीर,
रूलाती है जिंदगी।

फटा कैसे ये आसमां,
कोई न था रहनुमा ।
ख़ाक हुए ख्वाब सारे,
रूलाती है जिंदगी।

कोई नहीं है किसी का,
भाग्य से मिला है धोखा।
छाया ये मातम कैसा,
रूलाती है जिंदगी।

कौन देता है सहारा,
अब ना मिले किनारा।
डुबती नैया तरसें ,
रूलाती है जिंदगी – –

प्रा.गायकवाड विलास
मिलिंद महाविद्यालय लातूर
महाराष्ट्र

भगवान महाकालः जिनके सामने हनुमान जी ने दिया था प्रभु श्रीकृष्ण के जन्म का आशीर्वाद

(पवन वर्मा–विनायक फीचर्स)

उज्जैन संपूर्ण पृथ्वी पर एक ऐसी अद्‌भुत नगरी है जिसका महत्व हर काल और समय में रहा है। भगवान महाकालेश्वर की महत्ता की अनेक कथाएं विभिन्न धर्मग्रंथों में मिलती हैं। उज्जैन से जुड़ी एक कथा महावीर, परम प्रतापी श्री हनुमान जी से भी जुड़ी हुई है। इस कथा के अनुसार महाकाल के सामने ही श्री हनुमान जी ने एक पांच वर्षीय बालक की महाकाल भक्ति से प्रसन्न होकर उसे यह वरदान दिया था कि उसकी नौंवी पीढ़ी में भगवान श्री नारायण अवतार लेगें और उनका नाम श्री कृष्ण होगा।

संपूर्ण भारत में ज्योर्तिलिंगों की आराधना, उपासना एवं दर्शन की अति प्राचीन परंपरा है। यह सर्व विदित है कि ये सभी ज्योतिलिंग स्वयंभू हैं एवं इस धरती पर प्रगट हुई शिव की ज्योति के प्रतीक है। भारत के बारह ज्योर्तिलिंगों जिन्हें द्वादश ज्योर्तिलिंग भी कहा जाता है उनमें उज्जैन के महाकालेश्वर का अपना अलग अनूठा एवं अद्‌भुत महत्व है।

भूतभावन देवाधिदेव महादेव के उज्जैन में महाकालेश्वर के रूप में प्रतिष्ठित होने की कथाएं शिवपुराण में विस्तार से मिलती हैं। इसके अलावा वामन पुराण, स्कन्द पुराण, मत्स्य पुराण, भविष्य पुराण और सौर पुराण में भी भगवान महाकाल की महत्ता एवं वंदना के अनेक प्रसंग मिलते हैं।

शिवपुराण में वर्णित कथा के अनुसार पृथ्वी पर शिवजी को अत्यंत प्रिय, परमपुण्य दायी, संसार को पवित्र करने वाली और संसार के समस्त प्राणियों को मुक्ति दे देने वाली परम पावन अवंति नगरी (वर्तमान उज्जैन) में एक श्रेष्ठ ब्राह्मण अपने पुत्रों के साथ रहते थे। वे ब्राह्मण पिता – पुत्र प्रतिदिन पार्थिव शिवलिंग बनाकर भगवान शिव की पूजन किया करते थे। इस धर्मनिष्ठ ब्राह्मण के चार पुत्र देवप्रिय, प्रिय मेधा, सुकृत और सुव्रत थे।

इन सभी के पुण्य प्रताप से पृथ्वी पर निरंतर सुख बढ़ रहा था। उसी समय रत्नमाल पर्वत पर दूषण नामक एक असुर रहता था । उसने ब्रह्मा जी को प्रसन्न करके वरदान प्राप्त कर लिए और तपस्वियों और तथा ब्राह्मणों को सताने लगा। तब उज्जैन के इन शिवभक्त ब्राह्मणों ने धैर्य धारण करके पार्थिव शिवलिंग बनाकर भगवान शिव की आराधना की और इस राक्षस से मुक्ति की प्रार्थना की। भक्त की पुकार से भगवान महादेव अपनी समाधि छोड़कर पार्थिव लिंग से प्रगट हुए और भयंकर गर्जना करते हुए दूषण राक्षस एवं उसकी सेना को भस्म कर दिया ।

महाकाल : समुत्पन्नो दुष्टानां त्वादृशामहम् ।

खल त्व ब्राह्मणांना हि समीपाद् दूरतो व्रज ध

इत्युक्त्वा हुंकृतेनैव भस्मसात्कृत वांस्तदा ।

दूषणं च महाकालः शंकरः सबलं द्रुतम ।।

(स्कंद पुराण, कोटि रूद्र संहिता)

दूषण का वध करने के बाद ब्राह्मणों की प्रार्थना पर भगवान महाकाल ज्योर्तिलिंग स्वरूप में उज्जैन में स्थापित हो गये और वहां से चारों दिशाओं में एक कोस के परिमाण वाला स्थान महाकाल का कल्याण मय क्षेत्र हो गया। यहां आकर जो भी व्यक्ति जिस भी कामना से महाकाल की उपासना करता है उसकी वह इच्छा पूर्ण होती है।

महकाल के दर्शन करने मात्र से मनुष्य को स्वप्न में भी कभी कोई दुख नहीं होता।

महाकालेश्वरो नाम शिवः ख्यातश्च भूतले।

तं दृष्ट्वा न भवेत्स्वप्ने किंचिद्दः खमपि द्विजाः ।।

(स्कंद पुराण)

भगवान महाकाल की कृपा के वैसे तो पुराणों में कई वृतांत है जिनमे राजा चंद्र सेन और श्रीकर गोप का वृतांत भी काफी उल्लेखनीय है। पुराणों के अनुसार उज्जैन नगर (तब इसे उज्जयिनी नगरी कहा जाता था) में चंद्रसेन नामक एक राजा थे। वे बड़े प्रतापी एवं शिवभक्त थे। उनकी शिवभक्ति से प्रसन्न होकर महादेव के गण मणिभद्र ने उन्हें एक चिन्तामणि प्रदान की। उस मणि के प्रकाश से कांसा, ताँबा, पीतल, लोहा, शीशा और पत्थर तक स्वर्ण बन जाते थे। यह मणि दर्शन करने और ध्यान करने मात्र से ही कल्याण प्रदान करती थी। राजा चन्द्रसेन सदैव इस मणि को अपने गले में पहने रहते थे।

इस मणि की चर्चा संपूर्ण पृथ्वी पर व्याप्त थी । संसार के सभी राजा इस मणि को अपने अधिकार में लेना चाहते थे । इस सभी राजाओं ने मणि प्राप्त करने के अनेक प्रयास किए परंतु उन्हें यह मणि नहीं मिल पायी। तब उन राजाओं ने मिलकर अपनी राजा चंद्रसेन पर आक्रमण करके बलपूर्वक मणि छीनने के लिए अभियान चलाया। इन राजाओं ने अपनी चतुरंगिणी सेनाओं के द्वारा उज्जयिनी के चारों द्वारों को घेर लिया। तब राजा चंद्रसेन देवाधिदेव महादेव की शरण में पहंचे और निर्विकल्प, निराहार, एकाग्रचित्त होकर महाकाल की आराधना करने लगे । उसी समय एक ग्वालिन अपने पांच वर्ष के बच्चे को लेकर वहां से गुजरी। माता – पुत्र ने आश्चर्य और आदर से राजा द्वारा की जा रही पूजा और अर्चना को देखा। राजा की शिवभक्ति से अभिभूत वह भोला बालक स्वयं भी एक पत्थर को शिवलिंग मानकर भक्तिभाव से उसकी पूजा अर्चना करने लगा। वह अबोध बालक शिव उपासना में इतना लीन हो गया कि उसकी भूख प्यास ही समाप्त हो गयी। जब उसकी मां ने उसे भोजन करने के लिए बुलाया तब भी वह बालक शिव उपासना में ही लीन रहा। माता जब स्वयं उसे बुलाने गयी और हाथ पकड़ध्कर खींचने का प्रयत्न किया तब भी वह बालक नहीं उठा तब क्रोधित माता ने शिवलिंग को उठाकर फेंक दिया तथा पूजन सामग्री को नष्ट कर दिया।

निर्जल,निराहार गोप बालक यह देखते ही दैव,दैव कहकर पृथ्वी पर गिर पड़ा और मूर्च्छित हो गया । कुछ समय पश्चात जब उस बालक की मूर्च्छा टूटी तब उसने देखा कि उस स्थान पर महाकाल का सुंदर शिविर (देवालय) बना हुआ था। इन्द्रनील मणि, हीरे और माणिक से सुसज्जित इस देवालय के द्वार स्वर्णमय और फर्श स्फटिक मणि का बना हुआ था। इस सबके बीच बालक गोप को देवालय के बीचोंबीच एक रत्नमय ज्योर्तिलिंग दिखाई दिया जो उसकी ही पूजन सामग्री से अलंकृत था ।

अचंभित बालक यह देखकर दौड़कर अपनी मां के पास पहुंचा तो ग्वालिन और गोप के शिविर भी भव्यता से परिपूर्ण हो चुके थे। ग्वालिन भी यह सब देखकर आनंदित और आश्चर्यचकित थी। सभी ने यह सूचना राजा को दी, राजा ने भी यहां आकर महाकाल के दर्शन किए। चिन्तामणि पाने की लालसा में उज्जयिनी को घेरने वाले राजाओं को जब अपने गुप्तचरों द्वारा यह सूचना मिली कि इस राज्य के शिशु भी इस तरह के शिवभक्त हैं तो वे भी अपने अस्त्र शस्त्र त्यागकर राजा चंद्रसेन से मित्रता करने आ गये। सभी राजाओं ने उस गोप कुघ्मार को संसार के सभी गोपों का राजा बना दिया। इसी बीच राजाओं की इस सभा में महाबली हनुमान जी भी वहाँ प्रकट हो गये और भगवान महाकाल के इस छोटे से भक्त गोपपुत्र श्रीकर को अपने गले से लगा लिया ।

उसी समय हनुमान जी ने सभी राजाओं के बीच घोषणा की कि इस गोप पुत्र ने सच्चे मन से भगवान महाकाल की पूजा करके उन्हें प्राप्त कर लिया है। यह श्रेष्ठ भक्त इस लोक के संपूर्ण सुखों को भोगकर अंत में मोक्ष को प्राप्त करेगा और उसी समय उन्होंने गोप पुत्र को भी आशीर्वाद दिया कि –

अस्य वंशेऽष्टमो भावी नन्दो नाम महायशाः

प्राप्स्यते तस्य पुत्रत्वं कृष्णो नारायन स्वयम् ।।

(श्री शिवमहापुराण, कोटिरूद्र संहिता)

अर्थात् इसके वंश की आठवीं पीढ़ी में महायशस्वी नन्द नामक गोप का जन्म होगा, और उनके पुत्र के रूप मे भगवान श्री कृष्ण के रूप में साक्षात भगवान नारायण ही अवतरित होगें। हनुमान जी गोप पुत्र (जिसका नाम श्रीकर भी हनुमान जी ने ही दिया था) को भगवान महाकाल को प्रिय लगने वाले शिवाचार का उपदेश दिया।

हनुमानजी के आशीर्वाद स्वरूप आगे चलकर इन्हीं गोप पुत्र श्रीकर की आठवीं पीढी में नन्द नामक गोप हुए जिनके पुत्र के रूप में भगवान श्रीकृष्ण ने जन्म लिया।

सुव्रत और गोप श्रीकर की कथाएं बताती हैं कि महाकाल का यह ज्योर्तिलिंग सज्जनों को शुभगति देने वाला, दुष्टों का विनाश करने वाला, परम कल्याणकारी तथा भक्तों के ऊपर सदैव दया करने वाला है।

(विनायक फीचर्स)

मासिक काव्यगोष्ठी संग सम्मान समारोह सम्पन्न

मुंबई। साकीनाका की धरा पर तुलसी विवाह के शुभ दिवस व राम जानकी मंदिर बद्रीधाम नब्बे फिट रोड लालबहादुर शास्त्री नगर साकीनाका मुम्बई के प्रांगण में काव्य सृजन परिवार की अनवरत चलती आ रही मासिक काव्य गोष्ठी का भव्य आयोजन हुआ। इसमें मुंबई के साहित्य प्रेमियों व कवि गण ने अपनी अनमोल उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री अमरनाथ द्विवेदी जी के पवित्र मंत्रोच्चार के साथ सम्मानित अतिथियों के हस्तों द्वारा मां सरस्वती के समक्ष द्वीप प्रज्ज्वलन व माल्यार्पण से हुआ। अतिथियों में श्री ओमप्रकाश तिवारी जी कार्यक्रम अध्यक्ष, सम्मान मूर्ति मे आदरणीय श्री डॉ हरि वाणी जी जो कानपुर से एवं विशेष अतिथि में सम्माननीय श्री ब्रिजेन्द्र मिश्र जी थे जो जमशेदपुर झारखंड से से पधारे थे। काव्य सृजन का मंच अतिथियों द्वारा सुशोभित हो गया । तदोपरांत संस्था के उपसचिव आनंद पाण्डेय "केवल"जी की स्वर्गवासी पत्नी को दो मिनट की मौन रखकर सभी दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की व भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। तत्पश्चात काव्य सृजन परिवार के वरिष्ठ सदस्य व साहित्यकार आदरणीय श्री हौसिला प्रसाद "अन्वेषी"जी ने साहित्य के वर्तनी सुधार पर अपना विचार प्रकट किया।काव्यगोष्ठी का आगाज श्री श्रीनाथ शर्मा जी की भोजपुरी सरस्वती वंदना से हुई। उसके पश्चात काव्य सृजन का मंच एक से बढ़कर एक काव्यों की दीप श्रृंखला से आलोकित हुआ। कार्यक्रम का सुंदर संचालन कवयित्री व काव्यसृजन परिवार की प्रवक्ता श्रीमती लक्ष्मी यादव" ओजस्विनी"ने किया। मंच पर जिन कवियों ने अपनी सुंदर प्रस्तुति दी उनमें श्री शंकर केहरी श्रीनाथ शर्मा, गुरु प्रसाद गुप्त, प्रा.अंजनी द्विवेदी"अनमोल", "आत्मिक"श्रीधर मिश्र व प्रोफेसर वाचस्पति आदि।मधुर कंठी श्री कल्पेश यादव ने वीर रस के गीत और हीरालाल जी के तरन्नुम में गाए गज़ल ने समां बांध दिया। कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति रही साहित्य साधक दंपति सौ. सत्य भामा सिंह "जिया"व शिव कुमार सिंह की। दोनों ने अपनी सुंदर काव्य प्रस्तुति दी। गमगीन श्री आनंद पाण्डे"केवल" ने जब ये पंक्तियां पढ़ी कि ' अभी तो सीप मे समंदर रोपने की कोशिश....' पढ़ी तो पूरा माहौल गमगीन हो गया। अवधेश " यदुवंशी "ने श्री हरि वाणी जी की रचना का काव्य पाठ किया। एड.श्री राजीव मिश्र ' मधुकर ' जी की भी उपस्थिति रही। समृद्ध मंच के भी आशीर्वचन से सभी लाभान्वित हुए। मुख्य अतिथि सम्माननीय श्री ब्रजेंद्र नाथ जी ने बुलंद आवाज में काव्य प्रस्तुति दी। वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय श्री हरि वाणी जी ने सीमित शब्दों में सार्थक विचार प्रकट करते हुए यह कहा कि आजकल साहित्य की वर्तनी सुधार से ज्यादा साहित्य कारों को अपनी वर्तनी सुधार पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है । श्री ओम प्रकाश तिवारी जी ने अपनी कार्यक्रम अध्यक्ष की भूमिका के साथ पूर्ण न्याय किया और इस कार्यक्रम को सुंदर अंजाम दिया। आभार प्रदर्शन का भार संस्था अध्यक्ष श्रीधर मिश्र जी ने लिया। अंत मे ' वंदे मातरम् ' गीत द्वारा इस सुंदर व सफल आयोजन का समापन हुआ।

कूर्मि महासभा द्वारा राष्ट्रीय एकता अखंडता दिवस का आयोजन

देश के प्रथम उप प्रधानमंत्री, भारत रत्न, लौह पुरुष

पालघर। सरदार पटेल की 150 वीं जयंती पर अ.भा.कूर्मि क्षत्रिय महासभा, महाराष्ट्र द्वारा राष्ट्रीय एकता अखंडता दिवस का आयोजन, तानसा ग्लोबल हाई स्कूल, वाड़ा, पालघर पर संजय पाटील की अध्यक्षता में किया गया। समारोह का शुभारम्भ महासभा के संरक्षक एल. पी. पटेल, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष श्रीमती लता ऋषि चंद्राकर ने दीप प्रज्वलित कर एवं सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. बाबूलाल सिंह पटेल, जनार्दन पटेल (उप महाप्रबंधक ओ एन जी सी), डॉ. रज्जन प्रसाद पटेल (वैदिक विद्वान एवं वास्तु शास्त्रज्ञ), डॉ. राममूर्ति वर्मा, वी के वर्मा .राष्ट्रीय संयोजक शाहीर उत्तम गायकर,नाशिक जिल्हाध्यक्ष निवृत्ती न्याहारकर,रायगड जिल्हा अध्यक्ष प्रकाश चांदीवडे,कोकण अध्यक्ष तुकाराम पष्टे,नरेश आखरे, पालघर जिल्हाध्यक्ष यदुनाथ पाटील.जिल्हा महासचिव जयंता पाटील, किशोर चौधरी,समीर पाटील , किसन बोंद्रे, पी एन पाटील, सुभाष पाटील,मोहन पाटील, मंगेश चौधरी,विजय राव, सीताराम पाटील,भाई कराळे, राजेंद्र पाटील,आप्पा घुडे प्रमुख अतिथि एवं वक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन राज्य महासभा महासचिव जयेश शेलार पाटील ने किया इस अवसर पर बोलते हुए एल. पी. पटेल ने कहा की बारडोली सत्याग्रह का सफल नेतृत्व कर अंग्रेजी हुकूमत को किसानों के विरुद्ध अपना फरमान वापस लेना पड़ा स उस आंदोलन में किसानों ने उन्हें सरदार की उपाधि प्रदान किया स यह उनका पहला कदम आजादी के आंदोलन में था। श्रीमती लता चंद्राकर ने कहा कि अंग्रेजी हुकूमत ने आजादी के समय यह सोचकर भारत छोड़ा कि यहाँ 500से ज्यादा रियासतें, राजे, रजवाड़े हैं, ये कभी एक नहीं होंगे आपस में लड़ते रहेंगे। परन्तु कुशल प्रशासक एवं गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपने विवेक, बुद्धि से कहीं बल प्रयोग कर सारी रियासतों को देश में मिलाकर अखंड भारत का निर्माण किया स इसलिए उन्हें लौह पुरुष कहा गया। डॉ बाबूलाल सिंह पटेल ने कहा कि अखंड भारत के शिल्पकार वल्लभ भाई पटेल शानदार थे, जवाबदार थे, असरदार थे, शानदार थे, ईमानदार थे, इसलिए सरदार थे स इसी वजह से सरदार पटेल का जन्मदिन राष्ट्रीय एकता अखंडता दिवस के रूप में मनाया जाता है।

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)
स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।
सम्पादक
पूजा प्रसाद पाण्डेय
मो0— 9833567799
R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377
Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org
समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।
सोच अच्छी ख़बर सच्ची